बी० ए० II

समाज शास्त्र -

~~मूल्यो से सम्ब~~

प्रगति की विशेषताए -

① मूल्यो से सम्बन्धित — प्रगति समाज द्वारा पूर्व निर्धारित परिवर्तन के मूल्यो से सम्बन्धित है। परिवर्तन के सम्बन्ध मे जब कोई मूल्य लक्ष्य के रूप मे सामने रखते है।

अस्थिरता — प्रगति अस्थिर अवधारणा है। समाज द्वारा आदर्श मूल्यो के अनुरूप होता है। आदर्श मूल्य स्थिर नही है। स्वयं परिवर्तन शील है। इसलिए परिवर्तन शील स्थिरता नही पायी जाती है। यह पर्यावरण के साथ-साथ परिवर्तित होती रहती है।

नियोजित प्रयत्न — निश्चित योजना के ~~समय~~ अनुसार परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है। परिवर्तन समाज द्वारा स्वीकृत मूल्यो के अनुरूप होता है।

PAGE NO.
DATE: / /

अच्छाई के लिए परिवर्तन → परिवर्तन ही वह प्रक्रिया है
अनरूप आती है जब परिवर्तन अच्छाई की दिशा में हो रहा है अच्छाई के लिए परिवर्तन को प्रगति कहते है। इसप्रकार परिवर्तन से समाज का कल्याण होता है।

सामूहिक — प्रगति की प्रक्रिया में सामूहिकता का गुण होता है।
इसमें अधिक से अधिक लोगो केलिए अधिक से अधिक लाभ के सिद्धान्त को आधार माना जाता है।

इस प्रकार प्रगति अनेक विशेषताओ से युक्त प्रक्रिया है व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, मानवीयता भेद-मुक्त समाज तीनो प्रगतिके सार्वभौम कार्यक्रम है।

उद्विकास और प्रगति में अन्तर —
साधारणतः उद्विकास एँव प्रगति को समान अर्थों में प्रयोग कर लिया जाता है।
उद्विकास निरन्तर सम्बन्धित परिवर्तन है यह परिवर्तन किसी भी दिशामें हो सकता है - प्रगति की ओर या अवनति की ओर। प्रगति भी परिवर्तन है। परिवर्तन प्रगति के लिए परिवर्तन है इसलिए इसमें मूल्यात्मक निर्णय निहित होता है।

PAGE NO.
DATE: / /

(1) "उद्‌विकास एक वैज्ञानिक अवधारणा है
और प्रगति एक नैतिक अवधारणा है।"
(2) उद्‌विकास एक तटस्थ प्रक्रिया है जो समाज
में होती रहती है। एक समाज जिसे प्रगति
मानता है। दुसरा इसे अवनति मान सकता है।
आधुनिक औद्योगिक विकास को कोई महा प्रगति मानता है
(3) समाज ने उद्‌विकास किया है। यह एक निश्चित तथ्य
है इसलिए स्पेंसर ने एक नियम स्वीकारा है।
जबकि यह कहना कठिन है। समाज ने प्रगति की है
(4) उद्‌विकास किसी भी दिशा में परिवर्तन है यह
दिशा उत्थान की हो सकती है या पतन की।
(5) उद्‌विकास में इच्छाअनिच्छा का सवाल नहीं
यह अपने आप स्वतन्त्र होता रहता है।
जीव जगत या वनस्पति जगत।
(6) उद्‌विकास से किसी वस्तुपरक का बोध होता
है इसमें मूल्यांकन का समावेश नहीं है
प्रगति में श्रेष्ठतर की ओर परिवर्तन का विचार
निहित है।